IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन

1कृपाल सिंह

2नगनारायण उपाध्याय

शाधे छात्र

शिक्षा विभाग

एस0 आर0 टी0 परिसर बादशाहीथौल टिहरी गढवाल

हे.न.ब.गढवाल (केन्द्रिय) विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढवाल उत्तंराखण्ड

सारांश

किसी भी समाज की उन्नति एवं विकास के लिए उस समाज के लोगो का शिक्षित होना, जागरूक होना, उत्तम स्वास्थ्य के साथ ही साथ रोजगार व स्वरोजगार के लिए संसाधनो तक पहुँच का होना एक अनिवार्य अंग माना गया है। पंचायत स्तर पर लोगो में शिक्षा और तकनीकी संसाधन शुरू होने से लोगो के सामाजिक और आर्थिक विकास मे महत्वपूर्ण बदलाव दिखाई दे रहा है और 21वी सदी में विकसित समाजो के समकक्ष नतृत्व प्रदान करने के योग्य बने पंचायत के लोग अपने अधिकारो तथा अवसरो की जानकारी सूचना इलक्टोनिक के माध्यम से प्राप्त कर रहे हैं। लोगो के जीवन स्तर (पोषण, शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य आदि) में महत्वपूर्ण सुधार दिखाई दे रहा है। बुक्सा जनजाति नैनीताल, उधमसिंह नगर, पौड़ी एवं देहरादून के क्षेत्रों मे पायी जाती है। जनसंख्या की दृष्टि से थारू और शौकाओं के बाद तीसरा स्थान बोक्साओं का है। ये स्वयं को धारानगर के पवार वंशी राजपूतों के वंशज मानते है। इनकी शारीरिक बनावट थारू जनजाति से मिलती जुलती है। परिवार पितृसत्तात्मक होते हैं लेकिन स्त्रियों का स्थान ऊँचा होता है। विवाह पद्धति हिन्दू–पद्धति से प्रभावित है। इस समाज में साली–विवाह, भाभी–विवाह तथा बैठाड़–विवाह और तलाक सर्व स्वीकृत माने जाते हैं। छोटे–बडे झगड़ों को निपटाने के लिए इनकी अपनी पंचायत होती है। ये राम, कृष्ण, शिव, गणेश, दुर्गा, काली तथा बाला सुन्दरी आदि हिन्दू देवी–देवताओं की पूजा करते हैं और उल्का, मनसा, शीतला, ग्राम देवता, वन देवता, कुल देवता, पीर और प्रधान आदि लोक–देवताओं को भी पूजते हैं। वहीं बुक्सा जनजाति समाज की महिलाएं आज भी पंचायत स्तर पर अग्रणी भूमिका का निर्वहन नहीं कर पा रही हैं। प्रस्तुत शोध पत्र इस समस्या पर प्रकाश डालने का एक प्रयास किया गया है जिसमें बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का अध्ययन को जानने की कोशिश की गयी है।

मुख्य शब्द : बोक्सा जनजाति, सामाजिक स्थिति, आर्थिक स्थिति ।

प्रस्तावना

बुक्सा जनजाति के लोग मुख्यतः उत्तरांखण्ड राज्य के नैनीताल, देहरादून, और पौड़ी गढ़वाल जिलों में निवास करते हैं। यह जनजाति पवांर, राजपूत घरानों से सम्बन्धित मानी जाती है। इन लोगों में माँस–मदिरा का प्रचलन अत्यधिक है। ये हिन्दू धर्म को मानते हैं तथा इनकी भाषा मुख्यतः हिन्दी होती हैं। इस जनजाति में विधवा विवाह, घरजंवाई तथा बहुविवाह प्रथा प्रचलित है। बुक्सा जनजाति को उत्तर–प्रदेश सरकार ने 1950 में अनुसूचित जाति तथा सन् 1956 में पिछडीं जाति के अर्न्तगत स्थान दिया था। इसके पश्चात् उत्तरांखण्ड की पॉच जनजातियों की श्रेणी में रखा गया था,

उनमें से एक बुक्सा जनजाति भी है। सन् 2011 के जनगणना के अनुसार इस जनजाति की जनसख्या 67906 है जो राजी तथा भोटिया जनजाति से अधिक है परन्तु थारू तथा जौनसारी जनजाति की सख्यां से कम है। इस जनजाति को मेहरा उपनाम से भी जाना जाता है। उत्तराखण्ड में मुख्य रूप से थारू, जौनसारी, बुक्सा, शौका (भोटिया) एवं राजी आदि जनजातियाँ निवास करती है । जिन्हें 1967 में संविधान की धारा 342 के अंर्त गत 5 जनजातियों को भारत के राष्ट्रपति द्वारा अनुसूचित जनजाति का दर्जा दिया गया।

बुक्सा जनजाति एक समय बहुत सम्पन्न थी तथा इनके पास पर्याप्त कृषि भूमि थी जो शराब की गलत आदत के कारण बिक गई। इनका मुख्य भोजन मछली एवं चावल है किन्तु शराब का प्रचलन अधिक होता है। **इतिहासकार आमिर हसन** ने बुक्सा जनजाति के सन्दर्भ में कुछ जानकारी अपनी पुस्तक "**ए बंच ऑफ वाइल्ड एंड अदर"** आर्टिकल में बताई है। उन्होने बुक्सा जनजाति की उत्पत्ति धारा नगर के राजा जगतदेव अथवा जयपुर के राजपूतों सें बताई है। इसके विपरीत कुछ स्थानीय लोगों का विश्वास है कि वे पवांर राजपूतों से संबंधिन्त है। इसी प्रकार बुक्सा जनजाति का एक विशेष समूह है जो स्वंम को राजस्थान के राजा जगतदेव द्यराने से संबध मानते है। बुक्सा जनजाति के संबंध में निम्न विचार वहॉ के स्थानीय निवासियों से प्राप्त की गई जानकारी के आधार पर माना गया है। इन विचारों के पीछे कोई ठोस तथा प्रमाणिक आधार नहीं पाया गया। आधुनिक परिप्रेक्ष में कुछ ऐसे भी समूह संगठन है जो आर्थिक एवं सामाजिक रूप से काफी पिछडे हुए है तथा जिनका जीवन–यापन बहुत कठिन और कष्टदायी है। सभ्यता की दृष्टि से पिछडे हुए इन मानव के विशेष समूहो को अनेक नामों से सम्बोधिन्त किया जाता है– जैसे आदिम जाती, जनजाति, वनवासी, वन्यजाति, आदिवासी इत्यादि। शिक्षा जगत के क्षेत्र में आज अनेकों परिवर्तन हो रहे हैं। ज्ञान के निरन्तर प्रसार से विषयों की संख्या में भीनिरन्तर वृद्वि हो रही है। विभिन्न नई–नई शाखाओ ने पूर्ण विषय का रुप धारण कर लिया हैं।

बुक्सा जनजाति बुक्सा शब्द की उत्पत्ति के सम्बन्ध में विभिन्न विद्वानो ने अनके किवदन्तियो ं का उल्लखे किया। बोकं शब्द से बोक्सा तथा कालान्तर में बुक्सा शब्द का सम्बन्ध इस जनजाति के अप्रवास काल के सन्दर्भ मे ंभी परिलक्षित होता है। इस सम्बन्ध में सबसे प्राचीन उल्लखे आइन–ए–अकबरी में मिलता है। जिसके अन्तर्गत अकबर के शसन के तराई क्षेत्र में बुक्सार क्षेत्र (वर्तमान में ऊधमसिंह नगर से किलपुरी क्षेत्र) का उल्लखे मिलता है। जिसे अकबर ने कुमाऊँ के राजा रूद्रचन्द को पंजाब के एक सफल युद्ध में अपनी वीरता प्रदशित करने के फलस्वरूप प्रदान किया था। उत्तराखण्ड के नैनीताल, देहरादनू, पौड़ी गढव़ाल एवं जनपदो ंका तराई क्षेत्र प्राचीन काल से ही बुक्सा जनजाति का निवास स्थान रहा है। शारीरिक बनावट के आधार पर एक औसत बुक्सा की औसत लम्बाई (5′ 4′′ से 5′ 8′′) लिये हुए तथा गठीले व मजबूत शरीर वाला दिखाई देता है। बुक्सा स्त्री व पुरूष दोनो ंही के चमड़े का रगं, गेहुंवा या गहरा काला होता है। चेहरा चौड़ा, तिरछी आँखें, चपटी नाक, मोटे होठं और काले बाल। मजूमदार (1944 : 37) ने मानवमितीय एवं रक्त परीक्षण के आधार पर बुक्सा जनजाति की थारूओ ंके ही समान मगोल प्रजातीय उत्पत्ति को प्रमाणित किया है।

अमीर हसन (1979) ने इन्हे ंसबसे अधिक हिन्दू कृत जनजातियो ंमें से एक माना है। अनके प्रकार के अन्धविश्वास जादू–टोने भी बोक्सा जनजाति में प्रचलित है। बोक्सा जनजाति को मुख्यतः 5 उपजातियो ं में विभक्त किया जा सकता है– 1. जदुवशी, 2. पँवार, 3. परतजा, 4. राजवशी, 5. तुनवार। इन सब उपजातियो ंमें सगोत्रीय विवाह निषिद्ध है।

बुक्सा जनजाति के सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का वर्णन निम्न तथ्यों के आधार पर

सामाजिक स्थिति–बुक्सा समाज एक सगंठित इकाई के रूप मे जीवन यापन करते है इस समाज में छुआछुत की भावना विल्कुल ना के बराबर है और समाज में उच्च–नीच की भावना कम ही होती हैं । उत्तरांखण्ड में बुक्सा जनजाति का सामाजिक ढाचॉ काफी सन्तुलित है। इस जनजाति के सामाजिक स्वरूप को निम्न तथ्यों के अन्तगर्त इसका अध्ययन किया जाता है ।

परिवार–बुक्सा जनजाति में एकल तथा सयुंक्त प्रकार के परिवार पाए जाते है । प्राचीन समय में इस जनजाति में सयुंक्त परिवार की प्रथा थी लेकिन आधुनिक बदलती परिस्थितियों के कारण अनेक परिवार एकांकी जीवन में विश्वास करते है और सुखी जीवन व्यतीत कर रहें है। सत्ता के आधार पर अधिक परिवार पृतसत्तात्मक होते है लेकिन कुछ परम्परा में लडकी विवाह उपरान्त अपने पति के साथ अपने मायके में ही रहती है। इसमें वंश परम्परा के नाम में पति के नाम से ही चलता है जबकी सम्पत्ति पर पत्नी का अधिकार होता है। हालांकी इस प्रकार की व्यवस्था बहुत कम देखने को मिलती है। बुक्सा निर्वासित स्थानों में अधिकतर संयुक्त परिवार पाये जाते है जिसमें सबसे बुजुर्ग व्यक्ति परिवार का मुखिया होता है। मुख्या की पत्नी गृह स्वामिनी होती है जो परिवार के समस्त सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, मामलों के निर्णय में महिला की भी बराबर की भूमिका होती है। पिता के मृत्यु के उपरान्त सम्पत्ति का बटबारा समान रूप से किया जाता है इसमें पुत्री को कोई हिस्सा नहीं मिलता है। यदि किसी परिवार में लडका पैदा नहीं होता तो वे परिवार किसी भी लडके को गोद ले सकता हैं। इस परम्परा के उपरान्त भी लडकियों का भी समाज में उच्च स्थान रहता है।

विवाह व्यवस्था–बुक्सा जनजाति में विवाह संस्कार हिन्दू मान्यता और परम्परा के अनुसार किया जाता है। इसमें लडकी पक्ष की और से लडके के घर जाकर रिश्ते की बात रखते है। इस जनजाति में समान गोत्र में विवाह निषेध है। इसके साथ यह जनजाति समान खेडा बासियों में भी विवाह नही कर सकतें क्योंकि समान खेडाबासियों के पुत्र तथा पुत्रीयों में भाई बहन का रिश्ता माना जाता है। बुक्सा समाज में जहॉ एक और कन्यादान देने की प्रथा रहती है तो कही कही दहेज के लोभी लोग भी रहते है जो केवल समाज के लिए किसी अभिशाप से कम नहीं होता है। इस समाज में बहुपत्नी प्रथा का भी प्रचलन पाया जाता है जो विशेष परिस्थितियों में प्रचलन में पाया जाता है।इस समाज में एक से अधिक पत्नीयॉ रखना गलत नहीं माना जाता है। इस जनजाति समाज में प्रेम विवाह को अनुमति नही देता परन्तु इसे पूर्ण रूप से गलत भी नही मानतें है।इस प्रकार के विवाह तब सम्पन्न होते है जब उन दोनो का गोत्र असमान हो। कुछ बोक्सा समूदाय में घरजंवाई की भी प्रथा का प्रचलन पाया जाता है जिसमें लडकी विवाह के पश्चात् अपने मायके में अपने पति के साथ रहती है ।हालाकि इस प्रकार का प्रचलन अब कम हो गया है।ये प्रचलन अधिकतर उन परिवारों पर अधिक लागू होता है जिन परिवार में लडके नहीं होते है।

तलाक व्यवस्था–बुक्सा जनजाति के लोग वैवाहिक रिश्तों को पति–पत्नी के रिश्ते को अटूट नही मानते इस कारण उन में तलाक की अधिक सम्भावना बनी रहती है। इस प्रथा को यह समूदाय गलत भी नहीं मानते क्योंकि उनका मानना है कि जब तक पति–पत्नी के बीच अच्छे सम्बन्ध नहीं है तो ऐसे रिश्ते से बेहत्तर तलाक है। अन्य समाज की तरह इस समाज में भी अवैध संबंध के कारण अधिकांश रिश्ते तलाक का कारण माना जाता है। बुक्सा जनजाति में पुनर्विवाह जैसे परम्परा का भी प्रचलन होता है परन्तु यह दो शर्तो पर लागू होता है पहला यदि विवाहित पुरूष अथवा महिला में से किसी की मृत्यु हो गयी हो या किसी आपसी मतभेद के कारण तलाक की अधिक सम्भावना रहती है।दूसरी बार विवाह की स्थिति में घ्यान रखना होगा कि इनके गोत्र एक समान ना हो। इस प्रकार इस जनजाति में तलाक अधिक आसानी से हो जाते है।

खानपान की व्यवस्था– बुक्सा जनजाति के लोग शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों ही प्रकार के होते है।यहॉ की जलवायु के अनुसार यहॉ धान की फसल मुख्य रूप से होती है इस कारण यहॉ के लोगों का मुख्य भोजन चावल होता है। यहॉ के लोगो को सव्जी उत्पादन और मछली पालन का शौक होता है जो इनकी आजीविका में सहायक होती है।इसके अतिरिक्त इन जनजाति क्षेत्र में जंगल से जंगली जानवरों का का शिकार करने का भी शौक होता है। इन जनजाति में शराब का अधिक सेवन लोग करते है जिस कारण इनकी आर्थिक स्थिति असन्तोषजनक रहती है। शराब की लत के कारण इनकी जमीनें तेजी से बिक रही है जिस कारण इनकी आजिविका का संकट उत्पन्न हो रहा है और परिवार का पालन–पोषण कठिन हो गया है।

महिलाओं की स्थिति–उत्तरांखण्ड में अन्य जनजातियों के समान ही बुक्सा जनजातियों की महिलाओं कां समाज में उचित स्थान मिलता है। महिलाएँ समाज का आधार है और अपने प्रत्येक कार्यो से समाज को नई दिशा प्रदान करती है। इस क्षेत्र में लोगों का खान–पान,रहन–सहन सरल है। ये लोग खेतो में फसलों का उत्पादन करते है । जिसमें महिलाओं का अपना विशेष योगदान है । महिलाएँ खेती व घर का कार्य सक्रिय रूप से करती है । थारू जनजाति की महिलाओं के समान इस जनजाति की महिलाऐ अपने आप को राजपूत राजवंश से संबधित मानती है। आज के दौर में इस समूदाय की महिलाए समस्त क्रियाकलाप में प्रतिभाग करती है।समाज के बढते जागरूकता प्रभाव से महिलाओं में शैक्षिक जागरूकता का निरन्तर विकास हो रहा है जो समाज के लिए आदर्श प्रस्तुत करती है। वर्तमान परिप्रेक्ष में इस समाज में महिलाओं का शैक्षिक अनुपात अधिक हो गया है।हालांकि कुछ क्षेत्रों में महिलाओं को पर्दे के पीछे तक ही सीमित किया जाता है। बुक्सा समाज में कही–कही आज भी महिलाओं को पर्दे के अन्दर रखना उचित मानते है लेकिन यह जागरूकता के अभाव के कारण हो रहा है।

बुक्सा जनजाति के आर्थिक स्थिति का अध्ययन–

बुक्सा जनजाति रूप से कृषक जनजाति मानी जाती है यह जनजाति हिमालय क्षेत्र में बाबर तराई में अपनी खेती–बाडी करती है जिससे इनकी आजिविका आसानी से चल सके । यहॉ की हरी–भरी भूमि अधिक उपजाउ मानी जाती है जिससे अधिक से अधिक फसलें उगाई जाती है । यह आमदानी को अधिक प्रभावित करती है।प्रारम्भ में इन जनजाति के पास अधिक जमीन थी लेकिन शराब की लत और इनका उदासीन रवैया के कारण इनकी जमीन दिन–प्रतिदिन कम होती जा रही है।

इस प्रकार ये अधिकतर भूमिहीन हो गये है जिस कारण इनके सामने आजिविका के साधनों का अभाव हो गया है।अब इन्हे दूसरों के जमींन पर काम करना पड रहा है। समाज में जागरूकता के कारण ही इस जनजाति का उत्थान हो सकता है। आर्थिक स्थिति के प्रमुख साधन निम्न साधन है–

कृषि व्यवसाय– कृषि व्यवसाय इस जनजाति का प्रमुख व्यवसाय माना जाता है।कृषि उत्पादन में प्रमुख रूप से गेहूं तथा जौ फसलें का उत्पादन किया जाता है।वर्तमान समय में ये लोग दलहन, तथा तिलहन, की फसल भी लेते है।कुछ आर्थिक स्थिति अच्छी ना होने के कारण इन्हे खाद्य सामग्री के अभाव में अच्छी फसल का उत्पादन नही हो पाता है। वे अभी भी अपने परम्परागत कृषि कार्य से ही अपनी आजीविका कमाते है। बुक्सा जनजाति के लोग कृषि में अधिक मेहनत करते ताकि उनकी आजीविका आसानी से चल सके। अनाज के अतिरिक्त ये लोग शीतकालीन सब्जियों का भी उचित व्यवसाय करते है जिससें आलू, प्याज, बैंगन, गोभी, मूली, टमाटर, अदरख, घनिया, मिर्च, लहसून, आदि का मुख्य उत्पादन मुख्य रूप से करते है।

पषुपालन व्यवसाय–पशुपालन व्यवसाय इन जनजाति का प्रमुख दूसरा व्यसाय है।पशुओं के रूप में लोग गाय,भैंस,बकरी,मुर्गी आदि पशुओं को पालते है। गाय, भैंस, बकरी, से दुग्ध की प्राप्ति करते है। इन जनजाति में बकरी पालन को भी व्यवसाय के रूप में किया जाता है जिसे बेचकर वे धन की प्राप्ति करते है जिससे इनकी आजीविका में सहायता मिल जाती है। इस जनजाति का मुख्य व्यवसाय कृषि है तथा दूसरा व्यवसाय पशुपालन है। लेकिन ये लोग कृषि को अधिक महत्व देते हैं। अब ये लोग सरकारी और गैर सरकारी नौकरी भी खूब करने लगे हैं तथा प्रशासन से लेकर निचली सेवाओं तक अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

उपसंहार

मानव वैज्ञानिक का एक समुदाय भारत को जनजातीय और गैर जनजातीय सांस्कृतियों के विलगाव और असम्बद्धता पर इतना अधिक बल देता रहा है कि आज हम उनको एकदम भिन्न मानने लगे है। लेकिन ऐतिहासिक संदर्भ में विचार करने पर स्पष्ट हो जाता है कि उतनी भिन्न और असम्बद्ध नही ं है ं जितनी समझी और समझायी जाती है। ं बहुत सी जनजातियाँ हिन्द ू समाज की जातियों में बदल गई है ं और बहुत सारी सांस्कृतिक विशेषताएँ उसकी सामान्य संस्कृ ति के अभिलक्षण बन गई है। जहाँ उनका स्थानांतरण जातियों में नहीं हुआ है, वहाँ भी गैरजनजातियों समुदायों से उनका सम्पर्क बना रहा है। यह जरूरी नहीं कि जो जनजातियाँ आज गैर जनजातियों साथ या समीप न रहकर उनसे दूर और अलग रही हैं, वे अतीत में उनके साथ या निकट नहीं रहती थी। उपलब्ध साक्ष्यो ं के अनुसार वे बहुत से भारतीयप्रदेशों में शताब्दियों से लगभग एक परिमती भौगोलिक क्षेत्र में निवास करती रही हैं

संदर्भ –ग्रन्थ

- पाण्डेय, ग.(2010). *भारतीय जनजातिय संस्कृति.* नई दिल्लीः कॉनसेप्ट पब्लिकेशन.
- त्रिपाठी, के. न. (2011). *परीक्षावाणी.* नई दिल्लीः बौद्धिक प्रकाशन.
- कंडारी, दी. (जनवरी 2011). *जनपक्ष आजकल.* नई दिल्लीः प्रकाशक– जोशी गिरीश.
- नेगी, गि. व जोशी, मं.(2011). *मध्य हिमालय जौनसारी भावर आँचल कल और आज.* नई दिल्लीः मल्लिका पब्लिकेशन.
- शर्मा, डी0 डी0. (2012). *उत्तराखण्ड का लोक जीवन एवं संस्कति.* हल्द्वानीः अंकित प्रकाशन.
- जौनसारी, र. (2004). *जौनसार भावर एक सांस्कृतिक, आर्थिक एवं सामाजिक अध्ययन.* देहरादूनः गीतांजली प्रकाशन.
- राणा, जे0 पी0. 2004). *जौनसार भावर दर्शन.* देहरादूनः सरस्वती प्रेस.
- चौहान, वि. (2010). भारत की जनजातियां. श्रीनगर गढवाल, उत्तराखण्ड. ट्रांस मीडिया प्रकाशन